कार्य-शिक्षा के उद्देश्य, कार्य एवं क्राफ्ट शिक्षा के सामाजिक, आर्थिक एवं शिक्षाशास्त्रीय मूल्य
[Aims of Work Education, Social, Economic and Pedagogical Values of Work and Craft Education]

कार्य-शिक्षा
(Work Education)

शिक्षा का महत्त्वपूर्ण तथा वास्तविक उद्देश्य छात्रों को जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ही शिक्षा में जीवन, हस्तशिल्प एवं अन्य कौशलों को शामिल किया जाना आवश्यक है। शिक्षा द्वारा ऐसी क्षमताएँ बच्चों में विकसित की जानी चाहिएँ जो बच्चों को जीवन की माँग तथा चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्षम बनाएँ। यह तभी संभव है जब बच्चे किताबी जानकारियों से बाहर आकर कार्य की दुनिया में प्रवेश करें।

कार्य-शिक्षा के उद्देश्य
(Purpose of Work Education)

समय सारिणी में स्थान दिए जाने से यह संभव है कि बच्चे हर परिस्थिति में—

(1) सामुदायिक संसाधनों का अर्थपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
(2) गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने के कौशल सीख सकेंगे।
(3) स्थानीय उपलब्ध संसाधनों के आधार पर अपनी आजीविका को पहचान सकेंगे।
(4) कार्य के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर ढूँढ़ सकेंगे।
(5) कड़ी मेहनत के साथ कार्य करने में गर्व का अनुभव कर सकेंगे।
(6) पाठशाला के निर्धारण कार्यों में रचनात्मक बदलाव ला सकेंगे।

कार्य-शिक्षा उद्देश्यपूर्ण तथा अर्थपूर्ण शारीरिक श्रम मानी जाती है। यह सामुदायिक सेवा तथा अर्थपूर्ण सामग्री के उत्पादन के रूप में समझी जाती है जिसमें बच्चे आनंद और खुशी को प्रदर्शित कर सकें। कार्य-शिक्षा शैक्षिक गतिविधियों में ज्ञान, समझ, व्यावहारिक कौशलों को शामिल करने पर जोर देती है।

कार्य-शिक्षा के सिद्धान्त
(Principles of Work Education)

(1) यह 'करके सीखना' सिद्धान्त पर आधारित है।
(2) शैक्षिक गतिविधियों में सामाजिक रूप से उपयोगी शारीरिक श्रम को सम्मिलित करके।
(3) किसी भी कार्य में संलग्न रहकर सीखने के सिद्धान्त पर आधारित।
(4) समुदाय के लिए उपयोगी सेवाओं तथा उत्पादक कार्य के रूप में सभी पहलुओं में एक आवश्यक कारक के रूप में।

कार्य-शिक्षा से संबंधित कारक
(Factors Related to Work Education)

कार्य-शिक्षा की सफलता हेतु निम्नलिखित कारक उत्तरदायी हैं—

(1) वैचारिक स्तर पर खुलापन।
(2) श्रम की गरिमा तथा सकारात्मक अभिक्षमता।
(3) समुदाय तथा शाला के मध्य सकारात्मक संबंध।

Scanned by CamScanner

(4) सहयोग की भावना।

(5) कल्पनाशीलता और रचनात्मक योग्यता।

उपरोक्त आधारों पर यह कहा जा सकता है कि कार्य-शिक्षा शारीरिक श्रम के साथ एक अर्थपूर्ण, उद्देश्यपूर्ण सार्थक गतिविधि है जिसे विद्यालयी पाठ्यक्रम के प्रत्येक चरण में संगठित तथा व्यवस्थित तरीके से सामाजिक सेवा के रूप में दिखाई देना चाहिए।

कार्य-शिक्षा में अंतर्निहित क्षमताएँ
(Inherent Capacities in Work Education)

(1) यह सभी विषय पढ़ने के लिए शिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित करती है।

(1) व्यक्तित्व विकास में मदद करती है।

(3) शिक्षा के विभिन्न स्तरों हेतु बच्चों में क्षमताएँ विकसित करती है।

(4) उत्पादन कार्य हेतु व्यावसायिक तैयारी तथा दक्षता विकसित करती है।

(5) विभिन्न उपकरणों, तकनीकों, प्रक्रियाओं, सामग्रियों और वस्तुओं से परिचित कराती है।

(6) सामुदायिक सेवा से संबंधित स्थितियों से परिचित कराने का अवसर प्रदान करती है।

(7) काम की दुनिया से परिचय कराती है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि कार्य-शिक्षा का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। वस्तुतः हम कह सकते हैं कि पूरी सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थितियाँ कार्य-शिक्षा के लिए प्रमुख कार्य क्षेत्र है। कार्य-शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को कैसे सक्रिय किया जाए, गतिविधियों का आयोजन करते समय कौन-सा कार्य क्षेत्र मुख्य आधार होगा, कोई सामग्री कैसी बनायी जाये और उपकरण की उपलब्धता आदि। इसके लिए कार्य-शिक्षा को शिल्प से जोड़कर देखना होगा। समय-समय पर हुए अध्ययनों में यह बात सामने आयी है कि कलात्मक गतिविधियों में शामिल छात्र अन्य विषयों में भी तुलनात्मक रूप से अधिक समझ विकसित कर लेते हैं। कलात्मक अभिरुचि जागृत होने और उसमें भागीदारी करने या लीन रहने पर छात्रों का मस्तिष्क तीव्र गति से काम करता है।

कला और शिल्प में अभिरुचि रखने वाले छात्र समस्याओं के हल तलाश करने में अधिक कुशाग्र होते हैं। वहीं उनके अंदर अभिव्यक्ति की क्षमता भी मुखर होती है। अनुशासन, आत्मसम्मान, व्यवस्थापन सहित अनेक गुणों का विकास शिल्प के माध्यम से होता है। प्रत्येक विद्यालय छात्रों के व्यक्तित्व एवं बौद्धिक विकास के साथ अवलोकनात्मक दक्षताओं में गुणात्मक वृद्धि के लिए नियमित रूप से कलात्मक गतिविधियों को संचालित करें।

इस प्रकार कार्य-शिक्षा एवं शिल्प के सामाजिक, आर्थिक एवं शिक्षाशास्त्रीय महत्त्व को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है—

कार्य एवं शिल्प शिक्षा का सामाजिक महत्त्व
(Social Values of Work and Craft Education)

प्रभावी कार्य-शिक्षा तभी संभव है जब विद्यालय परिवार एवं समाज तीनों अपनी जिम्मेदारी निभाएँ। यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि बच्चों की शिक्षा के लिए केवल विद्यालय ही जिम्मेदार नहीं वरन् परिवार एवं समुदाय की सहभागिता भी अनिवार्य है। महात्मा गांधी ने विद्यालय और समुदाय को साथ लाने की आवश्यकता पर बल दिया था। उनके अनुसार अगर शिक्षा द्वारा नयी सामाजिक प्रणाली स्थापित करनी है तो विद्यालय और समुदाय अलग नहीं हो सकते। हम सभी जानते हैं कि शिक्षण को समृद्ध बनाने के लिए शिक्षण और अभिभावकों को करीब आना चाहिए। समुदाय को बालकों की जरूरतों की चिन्ता करनी चाहिए। किसी भी परिस्थिति में समाज को बच्चों के विकास और शैक्षिणक उपलब्धता की जिम्मेदारी केवल विद्यालय पर नहीं छोड़नी चाहिए।

समुदाय की कार्य एवं शिल्प शिक्षा में भागीदारी
(Community Engagement in Work and Craft Education)

(1) बच्चों को रोज समय से विद्यालय भेजें।

Scanned by CamScanner

(3) पाठ्यक्रम निर्माण करते समय उद्देश्यों को पूरा करने का लक्ष्य सामने रखना चाहिए।
(4) स्कूल की दिनचर्या में आवश्यकतानुसार परिवर्तन लाना चाहिए।
(5) छात्रों को काम की असली दुनिया की एक झलक दिखानी चाहिए।
(6) उन्हें समाज से सीखने का मौका देना चाहिए।
(7) बालकों के शिक्षण/क्षमताओं के लक्ष्यों के साथ-साथ प्रदत्त अनुभवजन्य अधिगम के लक्ष्यों के आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर कार्य/शिल्प शिक्षा के शिक्षाशास्त्रीय महत्त्व को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

(1) शिक्षक, छात्र और समुदाय के बीच समन्वय बढ़ता है।
(2) कक्षा में समूह तथा अपनत्व की भावना को प्रोत्साहन मिलता है।
(3) बालकों में स्नेह, सुलभ, उत्साहपूर्ण और परवाह करने की क्षमता का विकास होता है?
(4) व्यावसायिक शिष्टाचार को बनाए रखने की क्षमता का विकास होता है।
(5) आत्मनिर्भरता की भावना का विकास होता है।
(6) बालकों में कार्य आधारित बौद्धिक समझ विकसित होती है।
(7) कला और शिल्प के विभिन्न पहलुओं को सीखने से उद्यमशीलता को प्रोत्साहन मिलता है।
(8) विद्यालय को बाहर के जीवन से जोड़ने के अवसर मिलते हैं।

विचारों के आदान-प्रदान, सक्रिय श्रवण और चुनौतीपूर्ण धाराओं के माध्यम से शिक्षण होता है—

(1) राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों की एक समझ विकसित होती है।
(2) छात्र बहुत बड़ी पृष्ठभूमि के लोगों के साथ प्रभावी ढंग से काम करने के लिए अंतर्वैयक्तिक और अंतर-सांस्कृतिक दक्षताओं का विकास करते हैं।
(3) छात्रों के अंदर नेटवर्किंग, संघर्ष समधान, सर्वसम्मति निर्माण और वार्ता कौशल विकसित होती है?
(4) छात्र अपने और दूसरों की सामाजिक और सांस्कृतिक समूह की पहचान को मान्यता देते हैं।
(5) विभिन्न चुनिंदा स्थानीय कला और शिल्प के विभिन्न पहलुओं के शिक्षण के माध्यम से उद्यमशीलता को प्रोत्साहन मिलता है।
(6) आत्मनिर्भरता के लिए स्वदेशी तरीकों के पाठ्यक्रम में सुधार होगा।
(7) चिंतनशील कार्यप्रणालियों को बढ़ावा मिलेगा।
(8) किसी भी रूढ़िवादिता के बिना व्यवसायों में लैंगिक और सामाजिक समानता बढ़ेगी।
(9) पाठ्यक्रम में निम्नांकित कौशलों को प्राथमिकता देनी चाहिए—जिससे ज्ञान और कौशल के बीच की खाई को पाटने में मद्द मिलेगी।

ये कौशल इस प्रकार हैं—

(1) सामाजिक कौशल,
(2) बौद्धिक कौशल,
(3) मनोवैज्ञानिक कौशल,
(4) संबंधपरक कौशल,
(5) रचनात्मक,
(6) अन्तर्बोध,
(7) सार्वजनिक जवाबदेही,
(8) सामाजिक सहानुभूति,
(9) सांस्कृतिक संवेदनशीलता,
(10) वैज्ञानिक मनोवृत्ति,

Scanned by CamScanner

(11) आत्मनिर्भरता,

(12) आत्मविश्वास।

उपरोक्त से स्पष्ट है कि कार्य को पाठ्यक्रम के हिस्से में पेश करके, सामुदायिक संसाधनों के उपयोग से शिक्षा को सार्थक बनाने के साथ-साथ बालकों को ऐसे ज्ञान एवं कौशल से युक्त करना संभव होगा, जो उन्हें उभरती अर्थव्यवस्था में उच्च शिक्षा पाने अथवा आजीविका पाने में सहायता करेंगे। इसके लिए शिक्षकों को भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, जिसमें सभी के लिए उत्पादक कार्य के अवसर सुलभ हों। विद्यार्थियों को जीवन में यथा संभव बेहतर बनाना ही लक्ष्य है। हमें ऐसी पाठ्यचर्या की आवश्यकता है जो लैंगिक रूप से संवेदनशील हो तथा कार्य व भूमिका के आधार पर लैंगिक विशिष्टता को बढ़ावा न दे। हमें ऐसे पाठ्यक्रम की जरूरत है जो दिव्यांगों को काम करने के अवसर देने को विशेष महत्त्व देता हो, जो प्रीस्कूल स्तर से ही बहुसंवेदी और उद्देश्यपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता हो।

यूनिट प्रथम के परीक्षोपयोगी प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कार्य शिक्षा से आप क्या समझते हैं? इसके सामाजिक तथा आर्थिक महत्व की विवेचना कीजिए।
2. श्रम की महत्ता को समझाइये। कार्य एवं श्रम के शिक्षाशास्त्रीय महत्व को लिखिए।
3. कार्य-शिक्षा के उद्देश्य लिखिए तथा इसके सामाजिक, आर्थिक एवं शिक्षा शास्त्रीय महत्व पर प्रकाश डालिये।
4. कार्य-शिक्षा से संबंधित गतिविधियों की विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कार्य शिक्षा को परिभाषित कीजिए।
2. शिल्प-शिक्षा का महत्व लिखिए।
3. श्रम का कार्य-प्रशंसा एवं संतुष्टि से क्या संबंध हैं?
4. शारीरिक श्रम का छात्रों के लिए क्या महत्व है?
5. कार्य-शिक्षा के सिद्धान्त बताइये।
6. कार्य-शिक्षा एवं शिल्प का सामाजिक महत्व क्या है?
7. कार्य-शिक्षा एवं शिल्प का आर्थिक महत्व लिखिए।
8. श्रम को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए दिये जाने वाले दिशा-निर्देशों का वर्णन कीजिए।
9. कार्य-शिक्षा से संबंधित कारक लिखिए।
10. कार्य-शिक्षा में अर्न्तनिहित क्षमताओं को लिखिए।
11. कार्य-शिक्षा से संबंधित कौशल बताइए।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. कोठारी आयोग ने उद्देश्यपूर्ण शिक्षा के बुनियादी तत्त्व कौन-से बताये हैं?
2. श्रम को परिभाषित कीजिए।
3. जीविका का क्या अर्थ है?
4. शिल्प शिक्षा का क्या अर्थ है?
5. कौशल से आप क्या समझते हैं?

Scanned by CamScanner